शासकीय स्वशासी दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव

संस्कृत विभाग

सत्र - 2008-09

प्राचार्य

डॉ. आर.एन.सिंह
शा.दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)

विभागाध्यक्ष

डॉ. (श्रीमती) सुमन सिंह बघेल
प्राध्यापक संस्कृत
शा.दिग्विजय महाविद्यालय
राजनांदगांव (छ.ग.)

संस्कृत विभाग में छात्र-छात्राओं के लिए शैक्षणिक एवम् शैक्षणिकेत्तर गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। विभाग के प्राध्यापकों के मार्गदर्शन में संस्कृत परिषद द्वारा विभिन्न कार्यक्रम सम्पन्न किये जाते है।

स्नातकोत्तर संस्कृत परिषद (2008-09) का गठन गत वर्ष की उत्तीर्ण परीक्षा में सर्वाधिक अंक के आधार पर किया गया। सर्वाधिक अंक कु. अवन्तिका श्रीवास्तव ने प्राप्त किये। उन्होने विभाग में ही नही अपितु महाविद्यालय में स्नातकोत्तर प्रथम एवं द्वितीस सेमेस्टर कक्षाओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त किये । अतः कु. अवन्तिका श्रीवास्तव को छात्रसंघ अध्यक्ष मनोनीत किया गया । स्नातकोत्तर परिषद के पदाधिकारी व कार्यकारी सदस्य इस प्रकार है -

अध्यक्ष	-	कु. प्रियंका ठाकुर	- तृतीय सेमेस्टर
उपाध्यक्ष	-	कु. ममता साहू	- प्रथम सेमेस्टर
सचिव	-	कु. पूजा देवांगन	- तृतीय सेमेस्टर
सहसचिव	-	कु. सीता तिवारी	- प्रथम सेमेस्टर
कार्यकारी सदस्य	-	1. कु. बरखा साहू	- तृतीय सेमेस्टर
		2. मनोज कुमार	- तृतीय सेमेस्टर
		3. कु. स्वाति मिश्रा	- तृतीय सेमेस्टर
		4. कुलेश्वर प्रसाद	- प्रथम सेमेस्टर
		5. कु. शिल्पी तिवारी	- प्रथम सेमेस्टर
		6. कु. भानुमती साहू	- प्रथम सेमेस्टर
		7. कु. शताब्दी सिंह	- प्रथम सेमेस्टर
		8. कु. वीणा मेश्राम	- प्रथम सेमेस्टर
		9. केवल राम	- प्रथम सेमेस्टर

परिषद के माध्यम से विभिन्न गतिविधियों का संचालन किया। विद्यार्थियों द्वारा प्रत्येक शनिवार को सेमीनार, परिचर्चा, समूह चर्चा, प्रश्नोत्तर आदि कार्यक्रम किये गये । इसके माध्यम से वे पाठ्यक्रम के साथ-साथ संस्कृत भाषा एवम् उसके इतिहास के विषय में परिचित हो। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता व महत्व में परिचित हों।

स्नातकोत्तर संस्कृत परिषद द्वारा व्याख्यान माला का आयोजन किया। संस्कृत विभाग द्वारा स्नातकोत्तर संस्कृत परिषद का उद्घाटन किया गया जिसमें डॉ. (श्रीमती) सुषमा तिवारी विभागाध्यक्ष संस्कृत विभाग, शासकीय कमला देवी महिला महाविद्यालय राजनांदगांव एवं प्राचार्य डॉ. ए.के. परसाई उपस्थित थे। डॉ. परसाई ने परिषद के उद्देश्य तथा कार्यो पर प्रकाश डालते हुए कहा कि परिषद के द्वारा ही छात्र विभिन्न विभागीय गतिविधियों में सक्रिय रहते हैं। यह उनके व्यक्तित्व का विकास भी करती है।

डॉ. (श्रीमती) सुषमा तिवारी ने आचार्य दण्डी रचित काव्यादर्श पर अपना सारगर्भित व्याख्यान दिया। उन्होने काव्य के लक्षण और विभिन्न आधारों पर उसका वर्गीकरण तथा मार्गगुण सिद्धांत का निरूपण

किया। इसी क्रम में यमक अलंकार के भेद-अभेद पर विस्तृत जानकारी दी।

विभागाध्यक्ष डॉ. (श्रीमती) सुमन सिंह बघेल ने कहा कि परिषद में छात्रों की सक्रिय भागीदारी से परिषद के कार्य तो सुचारू ढ़ंग से सम्पन्न होते हैं, साथ ही छात्रों का चहुँमुखी विकास होता है। उन्होने कहा कि दण्डी का संस्कृत काव्यशास्त्र के इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। दण्डी ने यमक अलंकार के विषय में कहा कि वर्णसंधात का व्यवधान से या अव्यवधान से पुनः पुनः उच्चारण यमक कहा जाता है। यमक के अव्यपेत एवं व्यपेत नामक दो भेद बताये गये हैं। कार्यक्रम के अन्त में कु. अवन्तिका श्रीवास्तव ने आभार व्यक्त किया।

विभाग के विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न विषयों पर अपने आलेख प्रस्तुत किये गये। एम.ए.तृतीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों ने इतिहास के स्त्रोत क्या थे ? विषय पर सामूहिक चर्चा की। उन्होने कहा कि पुरातात्विक सामग्री का प्राचीन भारत के अध्ययन के लिये विशेष महत्व है। इतिहास के स्त्रोत के अन्तर्गत अभिलेख, सिक्के, स्मारक, भवन, मूर्तियां, चित्रकला, अवशेष और साहित्यिक स्त्रोतों के माध्यम से इतिहास की जानकारी मिलती है।

एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा एवं छात्रसंघ अध्यक्ष कु. अवन्तिका श्रीवास्तव ने आचार्य कुन्तक रचित ग्रंथ वक्रोक्तिजीवितम् के अन्तर्गत रचना के निर्माण व प्रयोजन पर कहा कि लोकोत्तर चमत्कारी वैचित्र्य की सिद्धी ही काव्य प्रयोजन है। कुन्तक के अनुसार धर्म, अर्थ, काम, मोद्व रूप पुरूषार्थ चतुष्टय का उपदेश ही सर्गबन्ध निर्मित काव्य के प्रयोजन है। काव्य का एक प्रयोजन व्यवहार ज्ञान भी है। सत्काव्य के द्वारा सामाजिक को सम्राट आदि के सच्चरित्रों के माध्यम से अलौकिक औचित्यानुसारि लोक व्यवहार के क्रियाकलापों का अधिगम कराया जाता है। सह्दय हृदय में रसानंद की सृष्टि द्वारा चमत्कार का आधान करना काव्य प्रयोजन है।

महाकवि शुद्रक रचित मृच्छ्कटिकम् नाटक की सामाजिक राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति पर परिचर्चा की गई। मृच्छकटिक की कथावस्तु लौकिक है, यथार्थ जीवन के आधार पर कल्पित की गई है। इसमें समाज के मध्यम वर्ग का चित्रण है और तत्कालीन समाज का प्रतिबिम्ब दृष्टिगोचर होता है।

मृच्छकटिक के समय राजनैतिक स्थिति अच्छी नहीं थी। राजा स्वेच्छाचारी होता था। सामाजिक स्थिति भी उस समय छिन्न-भिन्न थी और जाति व्यवस्था कठोर हो चली थी। मृच्छकटिक के समय देश आर्थिक दृष्टि से समृद्धिशाली था और कलायें समुन्नत अवस्था में थी।

व्याख्यान की इसी श्रृंखला में बौद्धकालीन स्थापत्य कला पर डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने व्याख्यान दिया। उन्होने बौद्धकालीन स्थापत्य कला को श्रेष्ठ सिद्ध किया। उन्होने कहा कि अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण करने के पश्चात् बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण प्रदान किया। कला के माध्यम से बौद्ध धर्म का प्रचार किया। चैत्य, स्तूप, स्तम्भों पर गौतम बुद्ध की जीवनी को प्रदर्शित किया। बौद्धकालीन स्थापत्य कला के प्रमुख क्षेत्रों में पाटिलपुत्र, सांची, भरहुत, सारनाथ, बौद्धगिरी, खंडागिरी, उदयगिरि, अजन्ता, एलोरा, प्रमुख हैं। मौर्यकाल के अतिरिक्त शुंग सातवाहन काल, गुप्तकाल एवं वर्धनकाल के शासकों ने भी बौद्धकला को संरक्षण प्रदान किया। बौद्धकालीन स्थापत्य की प्रशंसा विदेशी विद्वानों मैगस्थनीज, एरियन स्ट्राबों, ह्वेनसांग, फाह्यान आदि ने भी की है।

संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. सुमन सिंह बघेल ने कहा कि बौद्ध स्थापत्य कला में चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक, समुद्रगुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय, कलिंग सम्राट, खारवेल, पुण्यमित्र शुंग का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

विभाग के छात्र-छात्राओं एवं प्राध्यापकों ने जिला पुरातत्व संग्रहालय राजनांदगांव का शैक्षणिक भ्रमण किया। उन्होंने विभिन्न स्त्रोतों के माध्यम से इतिहास का अध्ययन किया।

वेदान्तसार के प्रतिपाद्य विषय पर व्याख्यान शास.संस्कृत महाविद्यालय के सेवानिवृत्त प्राध्यापक प्रो.वी.पार्थसारथी राव द्वारा किया गया। उन्होने अपने सारगर्भित व्याख्यान में भारतीय संस्कृति की प्रशंसा करते हुए उसे अजस्त्र गंगा की समानता देते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति पर कितने ही आक्रमण हुए लेकिन हर बार वह अपने में समाहित करते हुये निरंतर प्रवाहित हो रही है। वेदान्तसार विषय पर बोलते हुए उन्होंने वेद और वेदान्त की उत्पत्ति ब्रम्ह और जीव की एकता के विषय में विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि पाश्चात्य दर्शन भौतिकतावादी है जबकि भारतीय दर्शन मनुष्य के आन्तरिक विकास को दर्शाता है। वह आत्म तत्व के व्यापक रूप का दर्शन कराता है। संस्कृत भाषा का जानकार वेदों तथा वेदान्तों का अध्ययन कर अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। साथ ही जीव और आत्मा क्या है ? ब्रम्ह क्या है ? इस सार्थक तत्व को उन्होने प्रस्तुत किया। जो अपने आप को जान लेता है वही ब्रम्हविद होता है। वेदान्त में जीवब्रम्ह की एकता, अनुबन्ध चतुष्टय, अज्ञान पञ्चीकरण और कोऽहं से सोऽहं की व्याख्या की।

विभागाध्यक्ष डॉ.(श्रीमती) सुमन सिंह बघेल ने कहा कि वेदान्तसार के अनुसार आत्मा ही सत्य है, यथार्थ है। इसके अतिरिक्त जो कुछ प्रतीत होता है वह सब मिथ्या है, भ्रम है। अविद्या के कारण जीवन मे अंहकार एवं रागद्वेष आदि की भावनायें बनी रहती हैं इस कारण जीव ब्रम्ह के साथ अपने तादात्म्य को नहीं पहचान पाता है। यह अज्ञान ही जीव का बंधन है।

प्राचार्य डॉ. आर.एन.सिंह ने कहा कि वर्तमान परिवेश जब चारों ओर नैतिकता का हास हो रहा है। भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा का बहुत महत्व है, इनके द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है।

संस्कृत विभाग में विद्यार्थियों की संख्या इस प्रकार है -

स्नातक	- 75
स्नातकोत्तर	- 17

विभाग में एक प्राध्यापक का और एक सहायक प्राध्यापक का पद है।

प्राध्यापक - डॉ.(श्रीमती) सुमन सिंह बघेल - एम.ए., पी.एच.डी.

सहायक प्राध्यापक - श्री देवेन्द्र कुमार - एम.ए. (संविदा अंशकालीन)

सहायक प्राध्यापक - श्रीमती यशस्विनी तिवारी - एम.ए., एम.फिल (अंशकालीन)

विभाग के प्राध्यापकों द्वारा राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में शोध-पत्र प्रस्तुत किये एवं उपस्थित हुये।

डॉ.(श्रीमती) सुमन सिंह बघेल ने निम्नलिखित राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में शोध-पत्र प्रस्तुत किये।

1.	11.02.2009	**Rural Development As Conceived**	शासकीय कमला देवी महिला महाविद्यालय, राजनांदगांव (छ.ग.)

2.	20.02.2009	भारत में कृषि का इतिहास एवं छत्तीसगढ़ में कृषक पलायन	शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव (छ.ग.)
3.	21.02.2009	भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में नारियों की भूमिका	शा.बिलासा कन्या महाविद्यालय, राजनांदगांव (छ.ग.)

श्री देवेन्द्र कुमार एवं श्रीमती यशस्विनी तिवारी ने श्री राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी 20.02.2009 में भाग लिया।

डॉ. (श्रीमती) सुमन सिंह बघेल को संस्कृत अध्ययन मंडल का अध्यक्ष मनोनीत किया गया है। यह मनोनयन पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा 3 वर्ष के लिये किया गया है।

संस्कृत परिषद की प्रियंका अध्यक्ष

राजनांदगांव। शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव में स्नातकोत्तर संस्कृत परिषद का गठन प्राचार्य प्रो. एके परसाई के मार्गदर्शन में विभागाध्यक्ष डा. श्रीमती सुमन सिंह बघेल की उपस्थिति में किया गया। परिषद की अध्यक्ष कु. प्रियंका ठाकुर एमए अंतिम तृतीय सेमेस्टर, उपाध्यक्ष कु. ममता साहू एमए प्रथम सेमेस्टर, सचिव कु. पूजा देवांगन तृतीय सेमेस्टर, सहसचिव कु. सीता तिवारी एमए प्रथम सेमेस्टर मनोनीत किए गए हैं। कार्यकारिणी सदस्यों में कु. बरखा साहू, कु. स्वाति मिश्रा, मनोज कुमार, कु. शिल्पी तिवारी, कु. भानमती साहू, कु. वीणा मेश्राम, कुलेश्वर प्रसाद, केवल साहू, कु. शताब्दी सिंह को शामिल किया गया है।

बौद्धकालीन स्थापत्य कला श्रेष्ठ - डॉ. सिंह

राजनांदगांव. शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृति विभाग की स्नातकोत्तर परिषद द्वारा बौद्धकालीन स्थापत्य कला पर व्याख्यान के मुख्य वक्ता डॉ. शैलेन्द्र सिंह ने बौद्ध कालीन स्थापत्य कला के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला.

डॉ. सिंह ने कहा कि अशोक ने बौद्ध धर्म ग्रहण करने के पश्चात् बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण प्रदान किया. कला के माध्यम से बौद्ध धर्म का प्रचार किया. चैत्य, स्तूप, स्तम्भों पर गौतम बुद्ध की जीवनी को प्रदर्शित किया. बौद्धकालीन स्थापत्य कला के प्रमुख क्षेत्रों में पाटिलपुत्र, सांची, भरहुत, सारनाथ, बौद्ध गिरि, खंडगिरि, उदयगिरि, अजंता, एलोरा, कार्ले प्रमुख है.

मौर्य काल के अतिरिक्त शुंग सातवाहन काल, गुप्त काल एवं वर्धनकाल के शासकों ने भी बौद्ध कला को संरक्षण प्रदान किया गया था. बौद्धकालीन स्थापत्य कला की प्रशंसा विदेशी विद्वानों मेगस्थनीज, एरियन, स्ट्राबो, व्हेनसांग, फाहयान ने भी की है.

संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. सुमन सिंह बघेल ने कहा कि बौद्ध स्थापत्य कला में चंद्रगुप्त मौर्य, अशोक, समुद्र गुप्त, चंद्रगुप्त द्वितीय, कलिंग सम्राट, खारवेल, पुष्यमित्रशुंग का योगदान महत्वपूर्ण रहा. कार्यक्रम में विभाग के देवेन्द्र कुमार तथा एमए के विद्यार्थी उपस्थित थे.

राजनांदगांव. दिग्विजय महाविद्यालय में आयोजन.

शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय, राजनांदगांव
परिषद

पाश्चात्य दर्शन भौतिकवादी - डॉ. राव

राजनांदगांव. शासकीय दिग्विजय महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के तत्वावधान में वेदांतसार विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया. व्याख्यान के मुख्य वक्ता शासकीय संस्कृत महाविद्यालय के सेवानिवृत्त प्राध्यापक प्रो. वी. पार्थसारथी राव थे.

डॉ. वी. पार्थ सारथी राव ने वेद और वेदांत की उत्पत्ति और ब्रह्म और जीव की एकता पर प्रकाश डाला. उन्होंने कहा कि पाश्चात्य दर्शन भौतिकतावादी है, जबकि भारतीय दर्शन मनुष्य के आंतरिक विकास को दर्शाता है. इसी तथ्य को डॉ. पार्थ सारथी ने वेदांतसार के माध्यम से प्रस्तुत किया. साथ ही जीव और आत्मा क्या है? ब्रह्म क्या है? इस सार्थक तत्व को उन्होंने प्रस्तुत किया. प्राचार्य डॉ. आर.एन. सिंह ने कहा कि वर्तमान परिवेश में जब चारों ओर नैतिकता का ह्रास हो रहा है, भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा का बहुत महत्व है. इनके द्वारा व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है. विभागाध्यक्ष डॉ. सुमन सिंह बघेल ने कहा कि वेदांतसार के अनुसार आत्मा ही सत्य है, यथार्थ है. इसके अतिरिक्त जो कुछ प्रतीत होता है वह सब मिथ्या है, भ्रम है. अविद्या के कारण जीव में अहंकार एवं राग-द्वेष आदि की भावनाएं बनी रहती है. इस कारण जीव ब्रह्म के साथ अपने तादात्म्य को नहीं पहचान पाता है. यह अज्ञात ही जीव का बंधन है. अंत में आभार कु. अवन्तिका श्रीवास्तव द्वारा किया गया. कार्यक्रम में डॉ. एच.एस. अलरेजा, श्रीमती यशस्विनी तिवारी, देवेन्द्र साहू एवं विद्यार्थी उपस्थित थे.